

सहेली की तड़फती जवानी-1

“नमस्कार दोस्तो, मैं सारिका कँवल आप सभी पाठकों का हार्दिक धन्यवाद करना चाहती हूँ जिन्होंने मेरी कहानियों को तहेदिल से सराहा। मुझे आपके ढेर सारे मेल मिले, पर कुछ लोगों... [\[Continue](#)

”
[Reading\] ...](#)

Story By: saarika kanwal (saarika.kanwal)

Posted: Tuesday, September 16th, 2014

Categories: [फोन सेक्स चैट](#)

Online version: [सहेली की तड़फती जवानी-1](#)

सहेली की तड़फती जवानी-1

नमस्कार दोस्तो, मैं सारिका कँवल आप सभी पाठकों का हार्दिक धन्यवाद करना चाहती हूँ जिन्होंने मेरी कहानियों को तहेदिल से सराहा।

मुझे आपके ढेर सारे मेल मिले, पर कुछ लोगों ने मुझे बहुत ही निराशाजनक मेल किए जिसकी मैंने उम्मीद नहीं की थी।

आप सभी पाठकों को यदि कोई परेशानी हो तो जरूर मुझसे कहें, मैं अपनी तरफ से उत्तर देने की हर संभव प्रयास करूँगी।

खैर... आप सभी को मेरी कहानियाँ पढ़ने में मजा आ रहा है, तो आप सभी के लिए एक और कहानी पेश कर रही हूँ।

यह कहानी मेरी और मेरी एक सहेली जिसका नाम हेमलता है, उसकी है। मेरी वैसे दो सहेलियाँ हैं जो बचपन से साथ में खेली, पढ़ी और लिखी हैं जिनमें से मैंने तारा के बारे में ‘अंगूर का मजा किशमिश में’ कहानी में बताया था।

हम तीन सहेलियाँ आज भी एक-दूसरे के संपर्क में हैं पर समय के साथ पारिवारिक काम-काज में व्यस्त रहने की वजह से मिलना-जुलना कम हो गया है।

मैं धन्यवाद करना चाहूँगी उन लोगों का जिन्होंने फोन और इन्टरनेट जैसे साधन बनाए जो हमें आज भी जोड़े हुए हैं।

हेमलता भी मेरी तरह एक मध्य वर्ग की एक पारिवारिक महिला है, उम्र 46, कद काफी अच्छा-खासा है, लगभग 5'8" होगा, उम्र के हिसाब से भारी-भरकम शरीर और 2 बच्चों की माँ है। उसके दोनों बच्चों की उम्र 24 और 21 है और अभी पढ़ाई ही कर रहे हैं।

हेमलता हम तीन सहेलियों में से एक थी, जिसकी शादी सबसे पहले 21 वर्ष की आयु में हुई और बच्चे भी जल्दी हुए। उसके पति एक सरकारी स्कूल में क्लर्क थे और जब उसका दूसरा बच्चा सिर्फ 2 साल का था तब स्कूल की छत बरसात में गिर गई, जिसमें उसके पति के सर पर गहरी चोट आई।

शहर के सरकारी सदर अस्पताल ने उन्हें अपोलो रांची भेज दिया, पर रास्ते में ही उनकी मृत्यु हो गई थी। यह समाचार मेरे लिए काफी दुःखद था मैंने उसके बारे में पता किया तो मुझे ऐसा लगा कि जैसे उसके ऊपर मुसीबतों का पहाड़ टूट गया हो।

वो केवल 28 साल की एक जवान महिला थी जो अब दो बच्चों की विधवा माँ थी।

खैर... उसे इन सबसे उबरने में काफी समय लग गया और एक अच्छी बात यह हुई कि उसे अपने पति की जगह नौकरी मिल गई। उसने अपनी पढ़ाई शादी के बाद भी जारी रखी थी और स्नातक पूरा कर लिया था। जिसके वजह से आज वो अपने पति की कुर्सी पर है और बच्चों का भविष्य अच्छा है।

मैंने और तारा ने अपनी तरफ से उसे इस भारी सदमे से उबरने में हर संभव प्रयास किया जहाँ तक हमारी सीमाएँ थीं।

हेमा की नौकरी लग जाने से परिणाम भी सही निकला, दफ्तर जाने और काम में व्यस्त होने के बाद वो पूरी तरह से इस हादसे से उबर चुकी थी।

चार साल बीत गए थे। इस बीच तारा तो नहीं पर मैं हफ्ते में एक बार उससे बात कर लिया करती थी और कभी उड़ीसा से घर जाती तो मिल भी लेती थी।

एक अकेली जवान औरत किसी शिकार की तरह होती है, जिसके दो शिकारी होते हैं। एक तो मनचले मर्द जो किसी अकेली औरत को भूखे भेड़िये की तरह देखते हैं और दूसरा उसका

स्वयं मन भी उसे गलत रास्ते पर ले जाता है।

मनचले मर्दों को तो औरत दरकिनार भी कर दे पर अपने मन से कैसे बचे कोई..!

यही शायद हेमा के साथ भी अब होने लगा था, वो दूसरे मर्दों से तो खुद को बचाती फिर रही थी, पर अपने मन से बचना मुश्किल होता जा रहा था।

हेमा अब 33 साल की एक अकेली जवान विधवा थी और दो बच्चों की माँ भी, इसलिए कोई मर्द उसे पत्नी स्वीकार ले असंभव सा था। ऊपर से आज भी छोटे शहरों में समाज, जो औरतों की दूसरी शादी पसंद नहीं करता।

इसी सिलसिले में मैंने एक बार हेमा के घरवालों से बात की पर वो तैयार नहीं हुए ये कह कर कि हेमा अब किसी और घर की बहू है।

पर मेरे बार-बार विनती करने पर उन्होंने हेमा के ससुराल वालों से बात की, पर जवाब न सिर्फ नकारात्मक निकला बल्कि नौकरी छोड़ने की नौबत आ गई।

उसके ससुराल वालों ने यह शक जताया कि शायद हेमा का किसी मर्द के साथ चक्कर है सो उसे जोर देने लगे कि नौकरी छोड़ दे।

पर हेमा जानती थी कि उसके बच्चों का भविष्य उसके अलावा कोई और अच्छे से नहीं संवार सकता इसलिए उसने सभी से शादी की बात करने को मना कर दिया और दुबारा बात नहीं करने को कहा।

हालांकि उसने हमसे कभी शादी की बात नहीं की थी, बस हम ही खुद भलाई करने चले गए जिसकी वजह से हेमलता से मेरी दूरी बढ़ने लगी।

मैंने सोच लिया था कि अब उससे कभी बात नहीं करूँगी, पर बचपन की दोस्ती कब तक

दुश्मनी में रह सकती है।

कुछ महीनों के बाद हमारी बातचीत फिर से शुरू हो गई।

वो शाम को जब फुर्सत में होती तो हम घन्टों बातें करते और मैं हमेशा यही प्रयास करती कि वो अपने दुःखों को भूल जाए। इसलिए वो जो भी मजाक करती, मैं उसका जरा भी बुरा नहीं मानती। वो कोई भी ऐसा दिन नहीं होता कि मेरे पति के बारे में न पूछे और मुझे छेड़े ना।

धीरे-धीरे मैंने गौर किया कि वो कुछ ज्यादा ही मेरे और मेरे पति के बीच जो कुछ रात में होता है उसे जानने की कोशिश करने लगी।

एक बार की बात है मैं बच्चे को स्कूल पहुँचा कर दुबारा सो गई क्योंकि मेरी तबियत थोड़ी ठीक नहीं थी। तभी हेमा ने मुझे फोन किया मेरी आवाज सुन कर वो समझ गई कि मैं सोई हुई थी।

उसने तुरंत मजाक में कहा- क्या बात है.. इतनी देर तक सोई हो... जीजाजी ने रात भर जगाए रखा क्या ?

मैंने भी उसको खुश देख मजाक में कहा- क्या करूँ... पति परमेश्वर होता है, जब तक परमेश्वर की इच्छा होती है.. सेवा करती हूँ!

उसने कहा- लगता है.. कल रात कुछ ज्यादा ही सेवा की है ?

मैंने कहा- हाँ.. करना तो पड़ता ही है, तूने नहीं की क्या ?

मेरी यह बात सुन कर वो बिल्कुल खामोश हो गई। मैंने भी अब सोचा कि हे भगवान्...

मैंने यह क्या कह दिया !

वो मेरे सामने नहीं थी, पर मैं उसकी खामोशी से उसकी भावनाओं को समझ सकती थी।

पर उसने भी खुद को संभालते हुए हिम्मत बाँधी और फिर से मुझसे बातें करने लगी।

दरअसल बात थी कि मैं अपने एक चचेरे भाई की शादी में घर जाने वाली थी और उसने यही पूछने के लिए फोन किया था कि मैं कब आऊँगी, क्योंकि गर्मी की छुट्टी होने को थी तो वो भी मायके आने वाली थी।

शाम को मैंने उसका दिल बहलाने के लिए फिर से उसे फोन किया। कुछ देर बात करने पर वो भावुक हो गई।

एक मर्द की कमी उसकी बातों से साफ़ झलकने लगी। मैं भी समझ सकती थी कि अकेली औरत और उसकी जवानी कैसी होती है। सो मैंने उससे उसके दिल की बात साफ़-साफ़ जानने के लिए पूछा- क्या कोई है.. जिसे वो पसंद करती है ?

उसने उत्तर दिया- नहीं.. कोई नहीं है और मैं ऐसा सोच भी नहीं सकती.. मैं एक विधवा हूँ..!

तो मैं हैरान हो गई कि अभी कुछ देर पहले इसी तरह की बात कर रही थी, अब अचानक क्या हो गया। मैंने भी उसे भांपने के लिए कह दिया- अगर ऐसा सोच नहीं सकती तो फिर हर वक़्त क्यों किसी के होने न होने की बात करती हो..!

उसने भी मेरी बात को समझा और सामान्य हो गई।

तब मैंने सोचा कि चलो इसके दिल की बात इसके मुँह से आज निकलवा ही लेती हूँ और फिर मैंने अपनी बातों में उसे उलझाने की कोशिश शुरू कर दी।

कुछ देर तो वो मासूम बनने का ढोंग करती रही पर मैं उसकी बचपन की सहेली हूँ इसलिए उसका नाटक ज्यादा देर नहीं चला और उसने साफ़ कबूल कर लिया कि उसे भी किसी मर्द की जरूरत है जो उसके साथ समय बिताए... उसे प्यार करे..!

तब मैंने उससे पूछा- क्या कोई है.. जो उसे पसंद है ?

तब उसने बताया- हाँ.. एक मर्द कृपा है जो मेरे स्कूल में पढ़ाता है और हर समय मुझसे बात करने का बहाना ढूँढता रहता है.. वो अभी भी कुँवारा है, पर मुझे यह समझ नहीं आ रहा कि वो मुझे पसंद करता है या सिर्फ मेरी आँखों का धोखा है !

तब मैंने उसे समझाया कि वो उसे थोड़ा नजदीक आने दे ताकि पता चल सके आखिर बात क्या है ।

उसने वैसा ही किया और एक दिन हेमा ने मुझे फोन करके बताया कि उस आदमी ने उससे कहा कि वो उससे प्यार करता है और शादी करना चाहता है ।

पर हेमा ने उससे कह दिया- शादी के लिए कोई भी तैयार नहीं होगा और सबसे बड़ी मुसीबत तो जाति की हो जाती क्योंकि वो दूसरी जाति का है ।

तब मैंने हेमा से पूछा- आखिर तू क्या चाहती है ?

उसने खुल कर तो नहीं कहा, पर उसकी बातों में न तो 'हाँ' था न ही 'ना' था । मैं समझ गई कि हेमा चाहती तो थी कि कोई मर्द उसका हाथ दुबारा थामे, पर उसकी मज़बूरी भी थी जिसकी वजह से वो 'ना' कह रही थी ।

खैर... इसी तरह वो उस आदमी से बातें तो करती पर थोड़ा दूर रहती, क्योंकि उसे डर था कहीं कोई गड़बड़ी न हो जाए ।

पर वो आदमी उसे बार बार उकसाने की कोशिश करता ।

एक दिन मैंने हेमा से कहा- मेरी उससे बात करवाओ ।

तो हेमा ने उसकी मुझसे बात करवाई फिर मैंने भी उसे समझाया ।

वो लड़का समझदार था सो वो समझ गया पर उसने कहा- मेरे लिए हेमा को भूलना मुश्किल है।

शादी का दिन नजदीक आ गया और मैं घर चली आई और हेमा से मिली।

मैंने उसके दिल की बात उसके सामने पूछी- क्या तुम उस लड़के को चाहती हो ?
उसने कहा- चाहने न चाहने से क्या फर्क पड़ता है जो हो नहीं सकता, उसके बारे में सोच कर क्या फ़ायदा !

मैंने उससे कहा- देखो अगर तुम उसे पसंद करती हो तो ठीक है, जरूरी नहीं कि शादी करो समय बिताना काफी है, तुम लोग रोज मिलते हो अपना दुःख-सुख उसी कुछ पलों में बाँट लिया करो।

तब उसने कहा- मैं उसके सामने कमजोर सी पड़ने लगती हूँ.. जब वो कहता है कि वो मुझसे प्यार करता है।

मैंने उससे पूछा- क्या लगता है तुम्हें..!

मेरा सवाल सुन कर उसकी आँखों में आंसू आ गए और कहने लगी- जब वो ऐसे कहता है.. तब मुझे लगता है उसे अपने सीने से लगा लूँ, उसकी आँखों में इतना प्यार देख कर मुझसे रहा नहीं जाता !

मैं उसके दिल की भावनाओं को समझ रही थी, पर वो रो न दे इसलिए बात को मजाक में उड़ाते हुए कहा- तो ठीक है.. लगा लो न कभी सीने से.. मौका देख कर..!

और मैं हँसने लगी।

मेरी हँसी देख कर वो अपने आंसुओं पर काबू करते हुए मुस्कुराने लगी।

कहानी जारी रहेगी।

मुझे आप अपने विचार यहाँ मेल करें।

saarika.kanwal70@gmail.com

